नगरीकरण का समाजशास्त्रीय अध्ययन

मनीषा मिश्रा*

यूरोप में औद्योगिक क्रान्ति लगभग 18वीं शताब्दी में आयी। भारत में औद्योगीकरण ब्रिटिश शासन के माध्यम से ही आया। औद्योगीकरण के साथ–साथ नगरीकरण भी आया। देखा जाये तो ये दोनों प्रक्रियाएँ–नगरीकरण और औद्योगीकरण एक–दूसरे की पूरक और पारस्परिक हैं। विकसित देशों की तुलना में भारत में नगरीकरण एक धीमी प्रक्रिया है। यह होते हुए भी नगरों की जनसंख्या में वृद्धि हुई है। आज स्थिति यह है कि अधिकांश सुख–सुविधाएँ नगरों में केन्द्रित हैं। परिणाम यह हुआ है कि नगरीकरण का फैलाव सम्पूर्ण देश में असमान रहा है।[1] ग्रामीण क्षेत्रों के नगरीय क्षेत्रों में परिवर्तित होने की प्रक्रिया का नाम ही नगरीकरण है। जब औद्योगीकरण अथवा किसी दूसरे कारण से ग्रामीण क्षेत्र नगरों के रूप में परिवर्तित होने लगते हैं तब इस प्रक्रिया को हम नगरीकरण कहते हैं। नगरीकरण मुख्य रूप से नगरीयता से सम्बद्ध है। नगरीयता का तात्पर्य एक ऐसी जीवन पद्धति से है जिसमें व्यक्तिवादिता, सम्बन्धों में औपचारिकता, अस्थायित्व, परिवर्तनशीलता तथा अज्ञात स्थिति जैसी विशेषताओं का समावेश होता है। इस परिप्रेक्ष्य में नगरीकरण एक दोहरी प्रक्रिया है। इसमें गाँव का नगर के रूप में बदला तथा नगरीयता की स्थिति में वृद्धि होना दोनों विशेषताओं का समावेश है।

भारतीय समाज कोई 5000 वर्ष पुराना है। आर्यों से लेकर यानी धार्मिक समाज की जड़ों पर विकसित होता हुआ यह समाज आज एक सार्वभौम, प्रजातांत्रिक, समाजवादी और धर्म निरपेक्ष राष्ट्रीय समाज है। इसे बनाने में कई संस्कृतियों का योगदान दिया है। इसकी बहुत बड़ी विशेषता इसकी निरन्तरता है।[2] भारत में देश में नगरों के आविर्भाव की यह प्राचीनता ताम्राश्म काल में हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो नामक स्थानों पर बनी हुई है। नगरों के सन्निवेश एवं सामाजिक–आर्थिक दृष्टान्तों से प्रमाणित हो जाता है। यद्यपि ऐतिहासिक पुरातत्व में प्राचीन नगरों को महत्व मिला जहाँ तक अध्ययन नगरीकरण का हो या नगरों के उत्थान का, शहरों की शिनाख्त आवश्यक है। 'चाइल्ड की शास्त्रीय परिभाषा में शहरी क्रान्ति की विशेषताओं में विशाल इमारतों, घनी आबादी एवं बड़ी–बड़ी बस्तियों का होना आवश्यक है।'[3] एडम्स के अनुसार, 'विस्तृत आकार और घनी आबादी नगरीकरण के निर्णायक कारक हैं।'[4]

अमेरिका में नगरीकरण के इतिहास की खोज करने के लिए नगरीय अविस्थापनाओं के जनसंख्यात्मक आंकड़ों का आधार लिया गया है। इसी कारण नगरीकरण को एक गतिशील प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जाता है। नगरीकरण की अवधारणा को स्पष्ट करने की दृष्टि से हम नगरीयता तथा नगरीकरण का भेद जानने का प्रयास करते हैं। नगरीकरण का प्रमुख कारक तत्व औद्योगीकरण है। इसलिये यहाँ हम नगरीकरण और औद्योगीकरण के सम्बन्धों को भी जानने का प्रयास करेंगे।

***शोधछात्र, समाजशास्त्र विभाग दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर**

नगरीकरण एक प्रक्रिया है। परन्तु इस प्रक्रिया की विश्व में कोई सार्वभौमिक अवधारणा परिलक्षित नहीं की जा सकती है। औद्योगिक समाजों की तुलना में वाणिज्यिक, धार्मिक और शैक्षिक केन्द्रों में यह प्रक्रिया भिन्न–भिन्न रूप से प्रभावशील होती है। यद्यपि आज संसार में यह प्रक्रिया लगभग सभी प्रकार के समाजों में क्रियाशील है। 1900 में संसार में कुल 10 नगर ऐसे थे जो 10 लाख व ऊपर की जनसंख्या वाले थे। 1970 में ऐसे नगरों की संख्या 61 तक पहुँच गयी थी। आज 10 में से प्रत्येक 2 व्यक्ति ऐसे नगरों में निवास करते हैं जिनकी जनसंख्या 20,000 या इससे अधिक है। भारत में कलकत्ता नगर की जनसंख्या 60 लाख के लगभग पहुँच गयी है। जनसंख्या की अभिवृद्धि से नगरों का विकास होता है। नगर विकास की इसी प्रक्रिया को नगरीकरण कहते है।

आधुनिक युग में नगरीकरण की प्रक्रिया एक महत्वपूर्ण अवधारणा को लिए हुए प्रगट हुई है। यह एक सामाजिक प्रक्रिया के रूप में समाजशास्त्र के अध्ययन का विषय है। इस प्रक्रिया की अवधारणा के समाजशास्त्रीय विश्लेषणों में अनेक कठिनाइयाँ उपस्थित होती है। नगरीकरण की अवधारणा का प्रयोग कभी–कभी नगरीयवाद और नगरीय जीवन और नगरीय विकास के रूप में किया जाता है। नगरीकरण की अवधारणा को स्पष्ट करने हेतु हमें इन सभी दृष्टियों से विचार करना आवश्यक है। प्रथम, हम नगरीकरण और नगरीयता के परस्पर भेद को स्पष्ट करते है। नगरीयवाद अथवा नगरीयता और नगरीकरण की अवधारणाओं में परस्पर काफी भेद है। क्वीन और कारपेन्टर ने इन अवधारणाओं के परस्पर भेद को व्यक्त करते हुए लिखा है, 'नगरीयवाद का प्रयोग हम नगर निवास की प्रघटना को पहचानने के लिए करते है। नगरीकरण का प्रयोग एक विशिष्ट जीवन का ढंग जो, अद्‌भुत रूप से नगर निवास से सम्बन्धित है, को पहचानने के लिए करते है।' इसी प्रकार नगरीकरण और नगरीयवाद की अवधारणाओं में व्याप्त परस्पर अन्तर का स्पष्ट करते हुए बर्गल ने भी लिखा है, 'नगरीकरण एक प्रक्रिया के रूप में और नगरीयवाद एक दशा या परिस्थितियों के पुंज के रूप में समझे जायेंगे।'

उपरोक्त विचारों के आधार पर हम नगरीकरण को नगरीयवाद का पर्यायवाची शब्द नहीं मान सकते। नगरीकरण एक गतिशील प्रक्रिया है जो ग्रामीण एवं नगरीय दोनों प्रकार के जीवन में सदा परिलक्षित प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया की विशेषता के सम्बन्ध में भी बर्गल के विचार उल्लेखनीय है। वह लिखता है, 'जिस प्रक्रिया के द्वारा ग्रामीण क्षेत्र नगरीय क्षेत्रों में परिवर्तित होते हैं, उसे ही हम नगरीकरण कहते है।' इस प्रक्रिया के समान ही औद्योगीकरण भी एक प्रक्रिया है। ये दोनों प्रक्रियाएँ एक दूसरे से अति घनिष्ठता रखती है। इसीलिए कभी–कभी लोग नगरीकरण को पर्यायवाची मान लेते है। इस सम्बन्ध में भी स्पष्टीकरण कर लेना हमारे लिए आवश्यक है।

पिछली आधी शताब्दी से हमारे देश में शहरी विकास के कारण ग्रामीण व्यक्तियों का ऐसे शहरी क्षेत्रों में अपकेन्द्री पलायन हुआ जहाँ पर पहुंचने के लिये जनोपयोगी सेवाएं सुगमता से उपलब्ध थीं। कई व्यक्ति शहरों में इसलिये गये क्योंकि वहाँ रोजगार उपलब्ध थे। जो अभी भी गांवों में बसे हैं उन्हें भी शहरी जीवन की

सुविधाएँ उपलब्ध हैं यद्यपि वे शहरी केन्द्रों से मीलों दूर है। उत्कृष्ट राजमार्ग, बसें व मोटरें, रेडियो, टेलीविजन और अखबार ग्रामीणों को शहरी रोजगार और शहरी आवास और ग्रामीण सम्पर्क ने न केवल सामाजिक संरूपों में कुछ परिवर्तन किये हैं परन्तु जीवन की एक नई शैली से समन्वय भी स्थापित किया है। ग्रामीणों को अब शहरी जीवन के बारे में अधिक जानकारी है और उससे वे इस प्रकार प्रभावित हुए हैं कि अब वो जाति, धर्म आदि को अत्यधिक महत्व नहीं देते। वे अपने दृष्टिकोण में अधिक उदार हो गये हैं। वे अब अलगाव में नहीं रहते। कई किसानों ने खेती की नई पद्धतियाँ अपना ली हैं। न केवल उनके मूल्यों और आकांक्षाओं में परिवर्तन आया है पन्तु उनके व्यवहार में भी परिवर्तन हुआ है। जजमानी व्यवस्था कमजोर हो रही है और अन्तर्जातीय एवं अन्तर्वर्गीय सम्बन्धों में परिवर्तन आ रहा है। विवाह, परिवार और जाति की पंचायतों की संस्थाओं में भी परिवर्तन है। बीमारियों के उपचार के लिये प्रारम्भिक तरीकों पर निर्भर रहने के बजाय वे अब आधुनिक एलोपैथिक दवाई का प्रयोग करते हैं। चुनावों में भी इसी प्रकार वे एक प्रत्याशी की धार्मिक अथवा सामाजिक प्रतिष्ठा के स्थान पर उसकी क्षमताओं और राजनैतिक पृष्ठभूमि को महत्व देते हैं। ग्रामीण महिलाएँ नगरीकरण के परिवर्तनों से विशेष प्रभावित हुई हैं।

नगरीकरण की प्रक्रिया नगर से सम्बन्धित है। साफ तौर पर यह कहा जा सकता है कि नगर सामाजिक विभिन्नताओं का वह समुदाय है, जहाँ द्वैतीयक समूहों और नियन्त्रणों, उद्योग और व्यापार, घनी आबादी और अवैयक्तिक सम्बन्धों की प्रधानता हो। अतः हम कह सकते हैं कि नगर एक ऐसा जन–समुदाय होता है जिसकी अपनी कुछ विशेषतायें होती है। नगरों में विभिन्न प्रकार के उद्योग–धन्धे, व्यापार और वाणिज्य संस्थान होते हैं। इस कारण देश–विदेश के विभिन्न भागों में विभिन्न जाति, प्रजाति, धर्म और वर्ग के लोग नगर में आकर बस जाते हैं। इसीलिए नगर की आबादी बहुत अधिक होती है। इस आबादी में एकरूपता न होकर विभिन्नता होती है।

नगरीकरण की प्रक्रिया मनुष्य के विकास, उन्नति और प्रगति के साथ निरन्तर तीव्र होती गई। आधुनिक वैज्ञानिक और तकनीकी युग इसका उदाहरण है। वर्तमान में नगरों की स्थिति में विशेष वृद्धि देखने को मिलती है।

भारत में नगरीकरण के रूझान – जनगणना 1951–2011

वर्ष	कुल जनसंख्या		शहरी जनसंख्या			शहरों एवं नगरों की कुल संख्या
1951	36.11	–	6.24	–	17.3	3035
1961	43.92	21.6	7.89	26.4	18.0	2657
1971	54.81	24.8	10.91	38.3	19.9	3081
1981	68.33	24.7	15.95	46.2	23.3	3891
1991	64.83	23.9	21.76	36.4	25.7	4615
2001	102.86	21.5	28.61	31.5	27.8	5161
2011	121.02	17.6	37.71	31.8	31.1	7935

स्रोतः भारत की जनगणना, 2011

आबादी अधिक होने अर्थात् नागरिक समुदाय का बड़ा होने के कारण अधिकतर लोगों के साथ हमारा वैयक्तिक सम्बन्ध स्थापित नहीं हो पाता है। इस कारण नगर में द्वैतीयक समूहों और नियन्त्रणों की प्रधानता होती है। पर इन सभी विशेषताओं का विकास एकाएक नहीं हो जाता है। एक क्रमिक प्रक्रिया के रूप में एक समुदाय के जीवन में इन विशेषताओं का विकास होता है। इसी प्रक्रिया को 'नगरीकरण' कहते हैं।[5] नगरीकरण की प्रक्रिया नगर से सम्बन्धित है। नगरीकरण द्वारा गाँव धीरे–धीरेनगर में परिवर्तित हो जाता है। गाँव की परिस्थितिगत अवस्थाओं में इस तरह परिवर्तन हो जाता है कि वह फिर गाँव नहीं रह जाता और वहाँ लोगों के जीवन में 'शहरीपन' आ जाता है।"

योजना आयोग भारत सरकार के अनुसार, "भारत में ऐसे समस्त अधिवासों को शहरी क्षेत्र माना जाता है जो निम्नलिखित कसौटियों को पूरा करते है :–

(क) सांविधिक कस्बे – काननू के अतंर्गत अधिसूचित क्षेत्र की समस्त नगर–पालिकाएँ, नगर निगम, कैन्टूमेण्ट बोर्ड, अधिसूचित

(ख) जनगणना कस्बे – निम्नलिखित कसौटियाँ पूरी करने वाले अधिवास–

1. न्यूनतम 5000 जनसंख्या
2. कम से कम 75 प्रतिशत पुरूष कामगार जनसंख्या गैर कृषि कार्यों में रोजगार पाए हुए हो।
3. जनसंख्या घनत्व कम से कम 400 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. हो।"[6] नगरीकरण वह प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत शहर की आबादी में वृद्धि होती है तथा नये शहरों का विस्तार होता है। अर्थात यदि शहर की जनसंख्या में वृद्धि होती है या किसी जगह में नये शहर का विकास होता है तो उस प्रक्रिया को नगरीकरण कहा जाएगा।

सन्दर्भः

1. दोषी,एस.एल. एवं पी.सी.जैन (2009), भारतीय समाज संरचना और परिवर्तन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, पृ. 31–32.
2. दोषी,एस.एल. एवं पी.सी.जैन (2009), भारतीय समाज संरचना और परिवर्तन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, पृ. 31–32.
3. Child, V.Garden (1950), The Urban Revalution in Sharma, R.S. (2010), Bharat Ke Prachin Nagaron Ka Patan, Rajkamal Prakashan, New Delhi, p. 17-18.
4. Adams, R.Mack (1968), The Netural History of Urbanism, in R.S. (2010), Bharat Ke Prachin Nagaron Ka Patan, Rajkamal Prakashan, New Delhi, p.18.
5. अग्रवाल, अमित (2010), भारत में नगरीय समाज, विवेक प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 21–22.
6. योजना आयोग, भारत सरकार, नई दिल्ली.